5 फरवरी 2022: प्रेस विज्ञप्ति - **बेयरफुट कॉलेज तिलोनिया**

5 फरवरी 2022 को तिलोनिया बेयरफुट कॉलेज अपने 50 वर्ष पूरे कर रहा है । (1972-2022) ।

डून स्कूल में औपचारिक शिक्षा पूरी करने, सेंट स्टीफन कॉलेज में शिक्षा (1962-67) के बाद बंकर रॉय ने 1967 में अकुशल मजदूरों के साथ काम करने का तय किया, जो राजस्थान अजमेर जिले में खुले कुओं में खुदाई का काम कर रहे थे । उन 5 वर्षों (1967-71) में बंकर का परिचय अद्भुत परंपरागत ज्ञान से हुआ । ग्रामीण बुद्धि व्यवहारिक हुनर से अशिक्षित अत्यंत गरीब लोग अपने दैनिक जीवन की मूलभूत समस्याओं का हल निकाल रहे थे । इससे प्रेरित होकर गरीबों के लिए बेयरफुट कॉलेज शुरू किया । इसमें महात्मा गांधी के जीवन जीने वह काम करने के तरीकों को आधार बनाया । गांव के सीधे-सादे व्यक्तियों की टीम खड़ी की जो तिलोनिया के आसपास के गांव के थे । वे न्यूनतम मजदूरी पर कार्य करने वाले लोग थे । यह सारा काम गांधी के सिद्धांतों, सादगी, सामूहिक निर्णय प्रक्रिया, पारदर्शिता व जवाबदेही के सिद्धांत पर तबसे आज तक यानी 50 वर्षों से चल रहे है ।

नवीकरण ऊर्जा के साथ-साथ बेयरफुट कॉलेज के मिशन में केंद्रीय बिंदु गांधी के सिद्धांत रहे । इस कॉलेज में सब व्यक्ति समान है। जाति, लिंग, धर्म, उम्र व शिक्षा के आधार पर कोई भेद नहीं है । व्यवहारिक तौर पर इसका मतलब है कि कॉलेज में कोई पद सोपान नहीं है । अशिक्षा, तकनीकी ज्ञान में बाधा नहीं है, इस सिद्धांत को इस कॉलेज ने सिद्ध किया है । यह कॉलेज कागजी योग्यता से ज्यादा व्यवहारिक ज्ञान वह हुनर को ज्यादा महत्व देता है ।

**जल संग्रह** - समुदाय के बड़े बुजुर्गों से सीख कर वर्षा के जल को संग्रहित किया ताकि जमीन से कम पानी निकालना पड़े । इस माध्यम से 70 मिलियन लीटर बरसात के पानी को टैंक में एकत्रित किया गया । छोटे बांध, तालाब व टैंक में इसे एकत्र किया गया । परंपरागत स्रोतों को पुनर्जीवित कर 1650 से ज्यादा स्कूलों व भारत के 20 राज्यों के सैकड़ों गांव में साफ व पीने लायक पानी पहुंचाया गया ।

**महिला सशक्तिकरण** - अशिक्षित ग्रामीण महिला श्रमिकों की पहल से 1982 में राजस्थान सरकार के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय में न्यूनतम मजदूरी का केस लड़ा गया और विजय हासिल की । कुछ साल बाद ग्रामीण महिलाओं का 4 अक्टूबर 1985 को मेला आयोजित किया गया । पहली बार बलात्कार बड़ा मुद्दा बना । अशिक्षित ग्रामीण महिलाएं बेयरफुट स्वास्थ्य कर्मी, मिडवाइफ और हैंड पंप मिस्त्री बनी ।

**बेयरफुट महिला सौर ऊर्जा इंजीनियर** - भारत के 17 राज्यों और विश्व के 96 देशों की अशिक्षित ग्रामीण महिलाओं को 6 महीने के प्रशिक्षण में सोलर इंजीनियर बनाया गया । सोलर व्यवस्था को तैयार करने का व्यवहारिक ज्ञान मैं यह महिलाएं निपुण थी । इनका लाभ 5 साल तक डिग्री पाने वालों से ज्यादा था । बेयरफुट का यह गांधीवाद मॉडल विश्वव्यापी नाम कमा चुका है ।

**शिक्षा** - 1975 से रात्रिशालायें प्रारंभ हुई । लगभग 9000 लड़के-लड़कियां पहली बार स्कूल गए, और शिक्षा ग्रहण की । कुछ बाद में सरकारी स्कूलों में और कुछ अन्य स्कूलों में गए । हजारों को सरकारी नौकरी मिली ।

**रोजगार** - पहली प्रदर्शनी 1975 में लगाई तब से तिलोनिया बाजार उभर कर आया । अलाभकारी संस्था के रूप में ‘हथेली’ को पंजीकृत किया । यह राजस्थान के 25000 हुनरवालों के साथ काम कर रही है । हाथ का बड़ा कपड़ा, ख़राब कागज़ का इस्तेमाल कर कठपुतली बनाने व कागज़ बनाने का काम, चमड़े का व रंगाई, मेटल क्राफ्ट, ब्लाक प्रिंटिंग व डिजाइनिंग जैसे कार्यों से 25000 से जायदा महिलाओं का रोजगार मिला ।

**पर्यावरण** - बेयरफुट कॉलेज ने राजस्थान का पहला कचरा मुक्त व प्लास्टिक मुक्त गांव विकसित किया । यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक 4 गांव व पंचायत में फैला ।

**स्वास्थ्य रक्षा** - 1970 में एक डिस्पेंसरी से कार्य प्रारंभ किया । टाटा इंस्टिट्यूट की सामाजिक कार्यकर्ता ने इसे चलाया । अब बेयरफुट दंत चिकित्सक, स्वास्थ्य कर्मी, एवं मिडवाइफ लोगों के स्वास्थ्य की देखभाल कर रहे हैं । नियमित रूप से आंखों की देखभाल के कैंप, परिवार नियोजन का कैंप वह लगातार राजस्थान के डॉक्टर के आने से इन 50 सालों में लगभग 3 लाख लोगों का इलाज हुआ है ।

**वित्तीय सहायता**: स्कोल फाउंडेशन: एप्पल: माइक्रोसॉफ्ट: क्रेडिट सुइस: वर्ल्ड रीडर: यश फाउंडेशन: एसबीआई फाउंडेशन: कोटक महिंद्रा: विदेश मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय: नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ।

संपर्क: नितु सिंह देव - 7870321023, ईमेल - [nitu@swrctilonia.org](mailto:nitu@swrctilonia.org)